गणित कैलेंडर

स्वीटी मथुरिया (प्रधानाध्यापक)
प्रा. वि.,
नगला भग्ग, बढ़पुरा, इटावा।

पूर्व की स्थिति – विद्यार्थियों की गणित विषय में अरूचि और अपेक्षित उपलब्धि स्तर न होना एक सामान्य किन्तु बड़ी समस्या हैं। प्राथमिक विद्यालय, नगला भग्ग, बढ़पुरा, इटावा में भी इस समस्या के चलते विद्यार्थियों में विद्यालय आने और गणित की कक्षा में प्रतिभाग करने में अरूचि दिखाई पड़ती थी। बच्चे गणित से डरते थे और पढ़ना नहीं चाहते थे। इस समस्या को हल करने के उद्देश्य से गणित कैलेण्डर का विकास किया गया। स्वनिर्मित गणित कैलेण्डर का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वयं समझकर, खोजकर, हल करने की प्रवृत्ति का विकास करना है। यह मुख्य रूप से कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त प्रभावशाली है। विद्यार्थी इस कैलेण्डर के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर प्राप्त की गयी दक्षताओं, अवधारणाओं का सुदृणीकरण कर निपुण लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त कर पायेंगे, साथ ही साथ दैनिक जीवन में सामान्य जोड़, घटाव इत्यादि, गणितीय अवधारणाओं को भी समझ सकेंगे।

क्रियान्वयन– कैलेंडर गणित की विभिन्न अवधारणाओं को सिखाने के लिए एक उपयोगी शिक्षण सामग्री सिद्ध हो रहा है। इसके माध्यम से शिक्षिका गणित जैसे कठिन विषयों को व्यावहारिक और रोचक तरीके से सिखा रही हैं। जोड़ सिखाने के लिए कैलेंडर की तारीखों का उपयोग किया जाता हैं, जैसे किसी महीने के कुछ दिनों को जोड़ना, घटाना सिखाने के लिए किसी दो तारीखों के बीच का अंतर निकालने आदि का अभ्यास कराया जा रहा है। गुणा सिखाने के लिए महीनों के हफ्तों का उपयोग किया जाता है, जैसे– महीने में चार सप्ताह होते हैं और एक सप्ताह में सात दिन होते हैं, तो 04 सप्ताह में कुल कितने दिन होंगे? इसी तरह,

भाग सिखाने के लिए किसी महीने के दिनों को बराबर हिस्सों में विभाजित कर बच्चों को विभाजन की समझ दी जाती है। इसके अलावा, कैलेंडर का उपयोग करके बच्चों को पैटर्न पहचानने और महत्वपूर्ण तारीखों के बीच के दिनों का अंतर जानने जैसी मजेदार गतिविधियाँ भी कराई जाती हैं। इस तरह कैलेंडर के प्रयोग से बच्चे गणित के विभिन्न अवधारणाओं को सीखने के साथ–साथ समय प्रबंधन का भी अभ्यास करते हैं, जिससे गणित सीखना न केवल सरल बल्कि आनंददायक भी बन जाता है। इसके साथ–साथ ही कैलेंडर के माध्यम से पूर्ववर्ती, अनुवर्ती संख्याएं, भिन्न आकृतियों और वर्गमूल एवं प्रतिशत को भी सिखाया जा रहा है।

इसे और भी मनोरंजक बनाने हेतु कुछ ऐसे सवालों का भी निर्माण किया गया है जिनका हल करने पर उस दिन की ही तारीख निकलती है। विद्यार्थी इन सवालों को हल करके उस दिन की तारीख निकालते हैं और उत्तरों का मिलान कैलेंडर से करते हैं। शिक्षिका ने सिखाने में कैलेंडर का उपयोग करके गणित विषय का व्यावहारिक ज्ञान के देने के साथ–साथ इसे मनोरंजक बनाने का भी प्रयास किया है।

प्रभाव– इस स्वनिर्मित गणित कैलेण्डर के माध्यम से विद्यार्थी सरल दैनिक गणित तथा अपने परिवेश से जुड़ी गणितीय संगणना में रूचि लेने लगे हैं। विद्यार्थियों में मानसिक, तार्किक, एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का संवर्द्धन होता हुआ दिखाई पड़ता है। बच्चे उत्सुकता के साथ विद्यालय आते है, और इसमें दिये गये सवालों को हल करने के लिए उत्सुक रहते हैं। यह कैलेण्डर बच्चों को आकर्षित करता है। बच्चों को अपनी–अपनी पसन्द की गणित संक्रियाओं को हल करने में आनन्द आता है। जैसे– कुछ बच्चों को भिन्नों के सवाल हल करना अच्छा लगता है और कुछ को आकृतियों के सवाल हल करने में आनन्द आता है। इस टी0एल0एम0 द्वारा की जा रहीं गतिविधि का सकारात्मक प्रभाव विद्यालय में छात्र नामांकन व उपस्थिति पर भी स्पष्ट रूप से पड़ा है। पहले विद्यालय की उपस्थिति 55–60 प्रतिशत हुआ करती थी जो अब 90–95 प्रतिशत हो गयी है।